वेश्णु कौल

कवि वेष्णु कौल का असली नाम विषम्बर नाथ था। वह वेसू, तहसील कुलगाम के रहने वाले थे और वहां के ही एक स्कूल में अध्यापक थे। वह फारसी और कश्मीरी ज़बान में कविता लिखते थे, ओर अरबी ज़बान भी जानते थे। फारसी में उन का काव्य संग्रह **दीवाने अनादिल** के नाम से मशहूर है। कश्मीरी में भी बहुत सी लीलायें लिखी हैं और वाल्मीकि के रामायण का कश्मीरी ज़बान में कविता का रूप देकर अनुवाद किया है। यह किताब **वेष्णु प्रताप रामायण** के नाम से प्रसिद्ध है। इस किताब में कोई तीस हज़ार पद हैं। कौल साहिब की ज़्यादा तर कविताएं धार्मिक हैं।

वेश्णु कौल राम भक्त थे और उन्होंने विचारनाग, श्रीनगर के पण्डित नारायन जू धर से रूहानी तालीम पाई थी। हर रोज़ सुबह चार बजे नींद से उठ कर स्नान और संध्या के बाद भगवद्गीता के अठारह अध्याय पढना उन का नियम था। कौल साहिब के चार बच्चे थे। उन की पत्नी का छोटी आयु में ही देहांत हुआ था।

कहते हैं कि अपनी मां के आग्रह करने पर कौल साहिब ने दूसरी शादी करने के लिये हां कर दी। एक दिन सरकारी काम से छुट्टी लेकर वह शादी का प्रबन्ध करने के लिये घर आ गये और सब से छोटे बच्चे को गोद में लेकर प्यार करने लगे। बातों ही बातों में उन्होंने बच्चे को बताया कि अब तेरी दूसरि मां आने वाली है। बचे ने अपनी तोतली ज़बान में पूछा कि नई माइ मुझे मारे गी तो नहीं? मासूम बच्चे की इस बात से कौल साहिब के दिल पर बहुत गहरा असर हुआ और उन्होंने दूसरी शादी करने से इनकार कर दिया।

वेष्णु कौल १३ कार्तिक १९७५ बिक्रमी, सुबह चार बजे प्राणायाम की हालत में स्वर्गवास हुये। उन के एक मशहूर भजन की पहली पंक्ति इस प्रकार है:

अशिके ज़लु सुत्य् छॅल्य्तोस पादय। दीतोस नादय शीव शम्भू ।।